Toppersnotes®
Unleash the topper in you

छत्तीसगढ़

पटवारी

छत्तीसगढ़ व्यावसायिक परीक्षा मण्डल (CG VYAPAM)

भाग - 3

सामान्य हिन्दी एवं अंग्रेजी

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	वर्ण विचार	1
2	लिंग	5
3	वचन	8
4	काल	9
5	संज्ञा	11
6	सर्वनाम	13
7	विशेषण	14
8	क्रिया	15
9	कारक	22
10	समास	25
11	संधि	31
12	रस	47
13	छंद	49
14	अलंकार	57
15	वर्तनी शुद्धि	61
16	उपसर्ग	74
17	प्रत्यय	83
18	तत्सम – तद्भव शब्द	91
19	देशज शब्द	93
20	पर्यायवाची	97
21	विलोम शब्द	99
22	अनेकार्थक शब्द	105
23	वाक्य के लिए एक शब्द	108

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	मुहावरे	114
25	लोकोक्तियाँ	120
26	Article (लेख)	123
27	Pronoun (सर्वनाम)	127
28	Adjective (विशेषण)	130
29	Verb (क्रिया)	136
30	Adverb (क्रिया विशेषण)	143
31	Conjunction (संयोजक)	150
32	Preposition (उपसर्ग)	156
33	Voice (वाच्य)	173
34	Narration (कथन)	177
35	Antonyms & Synonyms (विलोम और पर्यायवाची शब्द)	186
36	One Word Substitution (एक शब्द प्रतिस्थापन)	198
37	Spelling Correction (वर्तनी सुधार)	221
38	Idioms & Phrases (मुहावरे और वाक्यांश)	225

1 CHAPTER वर्ण विचार

भाषा – परस्पर विचार विनियम को भाषा कहते हैं ।

- भाषा संस्कृत के भाष् शब्द से बना है । भाष् का अर्थ है बोलना।
- भाषा की सार्थक इकाई वाक्य है । वाक्य से छोटी इकाई उपवाक्य, उपवाक्य से छोटी इकाई पदबंध, पदबंध से छोटी इकाई पद (शब्द), पद से छोटी इकाई अक्षर व अक्षर से छोटी इकाई ध्वनि या वर्ण है।
- जैसे – हम शब्द में दो अक्षर (हम) एवं चार वर्ण (ह् अ म् अ) है ।

<u>लिपि</u> –किसी भाषा को लिखनें का ढंग लिपि कहलाता है। हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है । इसकी निम्न विषेशताएँ है ।

(i) यह बाएँ से दायें लिखी जाती है ।
(ii) प्रत्येक वर्ण का एक ही रूप होता है ।
(iii) उच्चारण के अनुरूप लिखी जाती है अर्थात् जैसे बोली जाती है, वैसी लिखी जाती है ।

व्याकरण – जिस शास्त्र में शब्दों के शुद्ध रूप एवं प्रयोग के नियमों का निरूपण होता है, उसे व्याकरण कहते है ।

वर्ण – हिंदी भाषा में वर्ण वह मूल ध्वनि है जिसका विभाजन नहीं हो सकता।

किसी भी भाषा की सबसे छोटी इकाई (ध्वनि) वर्ण कहलाती है।

जैसे :– क्, च्, ट् अ, इ, उ

वर्ण के भेद :– 2 प्रकार है।

(i) स्वर वर्ण (ii) व्यंजन वर्ण

स्वर वर्ण :– स्वतंत्र रूप से बोले जाने वाले वर्ण स्वर कहलाते है। हिन्दी वर्णमाला में कुल ग्यारह (11) स्वर ध्वनियाँ शामिल की गयी है ।

जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

स्वरो का वर्गीकरण :– मुख्यतः 5 आधार पर वर्गीकरण किया गया है।

1. मात्राकाल के आधार पर – 3 प्रकार है ।

(i) ह्रस्व स्वर – वे स्वर जिनके उच्चारण मे कम समय लगता है हस्व स्वर कहलाते है।

जैसे – अ, इ, उ, ऋ (कुल संख्या – 4)

नोट :– (इनको एकमात्रिक स्वर, मूल स्वर भी कहते है)

(ii) दीर्घ स्वर – वे स्वर जिनके उच्चारण मे मुल स्वर से अधिक समय/ दुगुना समय लगता है। वे दीर्घ स्वर कहलाते है। आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, (कुल संख्या –7)

(iii) प्लुत स्वर – जिनके उच्चारण में तीन मात्राओ का समय लगता है । स्वर के प्लुत रूप को दर्शाने के लिए उनके साथ 3 का चिह्न लगाया जाता है ।

जैसे – अ^3, आ^3, इ^3, ई^3, उ^3, ऊ^3, ए^3, ऐ^3, ओ^3, औ^3,

(2) उच्चारण के आधार पर :– (2 प्रकार है)

(i) अनुनासिक स्वर – स्वर का उच्चारण करने पर वायु मुख व नाक दोनो से बाहर निकलती है ।

नोट – अनुनासिक रूप को दर्शाने के लिए चन्द्रबिंदु का प्रयोग होता है ।

जैसे – अँ आँ इँ ईं उँ ऊँ एँ, ऐं ओं औं

(ii) अननुनासिक/निरनुनासिक स्वर – जब किसी स्वर का उच्चारण करनें पर श्वास वायु केवल मुख से ही बाहर निकलती है । वह अननुनासिक/ निरनुनासिक स्वर कहलाता है।

बिना चन्द्रबिन्दू के अपने मूल रूप में लिखे हुए स्वर अनुनासिक माने जाते है ।

जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ए, ऐ, ओ, औ,

(3) जिह्वा के आधार पर – (3 प्रकार है)

(i) अग्र स्वर :– उच्चारण करने पर जीभ के आगे वाले भाग मे सर्वाधिक कम्पन होना ।

जैसे – इ, ई, ए, ऐ

(ii) मध्य स्वर – उच्चारण करने पर जीभ के मध्य भाग में कम्पन – अ

(iii) पश्च स्वर – उच्चारण करने पर जीभ के पिछले भाग में अधिक कम्पन ।

जैसे – आ, उ, ऊ, ओ, औ , ऑ

पहचान :– निम्न सारणी के माध्यम से अग्र, पश्च, मध्यम भाग को जाने

अ – मध्य
इ ई ए ऐ – अग्र
आ उ ऊ ओ औ – पश्च

(4) होठों की गोलाई के आधार पर – 2 प्रकार है ।

(i) वृत्ताकार – उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल हो जाना।

जैसे :– उ, ऊ ओ, औ

(ii) अवृत्ताकार – उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल न होकर ऊपर–नीचे फैलना।

जैसे – अ, आ, इ, ई ए, ऐ

(5) मुखाकृति के आधार पर – 04 प्रकार है।

(i) संवृत स्वर – उच्चारण करने पर मुँह का कम खुलना। जैसे – इ, ई, उ, ऊ

(ii) अर्द्ध संवृत स्वर – उच्चारण करने पर मुँह का संवृत से थोडा ज्यादा खुलना – ए, ओ

(iii) विवृत – उच्चारण करने पर मुख का सबसे ज्यादा/पूरा खुलना। जैसे – आ

(iv) अर्द्धविवृत – उच्चारण करने पर मुँह का विवृत से थोडा कम खुलना।
जैसे – अ, ऐ, औ, ऑ

व्यंजन वर्ण

स्वर की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण व्यंजन कहलाते है।

हिन्दी वर्णमाला में कुल 35 मूल (33 + 2 उत्क्षिप्त) व्यंजन ध्वनियाँ होती है ।

जिनको तीन भागों में बाँटा गया है ।

(i) स्पर्श व्यंजन – (27) (मूल 25 + 2 उत्क्षिप्त)

(ii) अंतः स्थ व्यंजन – (04)

(iii) ऊष्म व्यंजन – (04)

(i) स्पर्श व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वास वायु हमारे मुख के किसी अंग को स्पर्श करते मुख से बाहर निकलती है वह स्पर्श व्यंजन कहलाते है ।

स्पर्श व्यंजन को 5 भागों में बाँटा गया है –

(अ) 'क' वर्ग – क् ख् ग् घ् ङ्.

(ब) 'च' वर्ग – च् छ् ज् झ् ञ्

(स) 'ट' वर्ग – ट् ठ् ड् ढ् ण्

(द) 'त' वर्ग – त् थ् द् ध् न्

(य) 'प' वर्ग – प् फ् ब् भ् म्

(ii) अंतः स्थ व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर सर्वप्रथम हमारे मुख के अन्दर स्थित स्वर तंत्रियो में कम्पन होता है, व उसके बाद श्वास वायु मुख में बाहर निकलती है तो वह अन्तःस्थ व्यंजन कहलाती है ।

कुल अन्तः स्थ व्यंजन – 4 है ।

जैसे :– य् व् र् ल्

(iii) ऊष्म व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वास वायु मुख से बाहर निकलते समय हल्की गर्म हो जाती है, तो वह ऊष्म व्यंजन कहलाता है।

कुल ऊष्म व्यंजन – 4 है।

जैसे – श, स, ष, ह

संयुक्त व्यंजन – इसी श्रेणी मे 4 व्यंजन शामिल किये जाते है ।

क्ष – ष् + अ

त्र – त् + र + अ

ज्ञ – ज् + ञ्+ अ

श्र – श् + र् + अ

व्यंजनों का वर्गीकरण

व्यंजनों का वर्गीकरण – मुख्यतः 2 प्रकार का है ।

(1) उच्चारण स्थान के आधार पर

(2) प्रयत्न के आधार पर

(1) उच्चारण स्थान के आधार पर –

स्वर – युक्त व्यंजन व उनका वर्गीकरण–

(अ) उच्चारण स्थान के आधार पर –

उच्चारण स्थान	नाम ध्वनि	वर्ग	व्यंजन	स्वर
कंठ	कंठ्य	क वर्ग	क ख ग घ ङ ह	अ आ
तलु	तालव्य	च वर्ग	च छ ज झ ञ य श	इ ई
मूर्द्धा	मूर्द्धन्य	ट वर्ग	ट ठ ड ण ड़ ढ़ ष र	ऋ
दाँत	दन्त्य	त वर्ग	त थ द ध न ल स	
ओष्ठ	ओष्ठ्य	प वर्ग	प फ ब भ म	उ ऊ
कंठ व तालु	कंठ्य–तालव्य			ए ऐ
दाँत व ओष्ट	दन्तोष्ठ्य		व	
कंठ व ओष्ठ	कंठोष्ठ्य			ओ औ
नासिक्य			ङ्., ञ् ण् न् म्	

2) प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण

मुख्यतः 3 भागों में बाँटा गया है –

(i) कंपन के आधार पर

(ii) श्वास वायु के आधार पर

(iii) उच्चारण के आधार पर

(i). कम्पन्न के आधार पर व्यंजन का वर्गीकरण

a) **अघोष :–** वे ध्वनियाँ जिनका उच्चारण करते समय स्वरतंत्रियो में कम्पन्न नहीं होता है अघोष कहलाते है। इसमें वर्ग का पहला,दुसरा वर्ण तथा श, स, ष आते है।

b) **घोष/सघोष :–** वे ध्वनियाँ जिनका उच्चारण करते समय स्वर तंत्रियों मे कम्पन्न होता है घोष/सघोष कहलाते है

इसमे वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ण तथा य. र, ल, व, ह और सभी स्वर आते है।

(ii). श्वास वायु के आधार पर व्यंजन का वर्गीकरण

a) अल्प प्राण :– ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण करते समय कम वायु बहार निकलती हो, अल्प प्राण कहलाते हैं।

b) महाप्राण :– ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण करते समय अधिक वायु की आवश्यकता होती है, महाप्राण कहलाता है।
इसमे दुसरा, चौथा वर्ण तथा श,स,ब,ह आते है।

(iii). उच्चारण के आधार पर –

इस आधार पर व्यंजन 8 प्रकार के होते है ।

a. स्पर्शी व्यंजन (16) क, ख, ग, घ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, प, फ, ब, भ
b. स्पर्श संघर्शी व्यंजन (4) – च, छ, ज, झ
c. संघर्षी व्यंजन (4) – ष, श, स, ह
d. नासिक व्यंजन (5) – ड., ञ, ण, न, म
e. उत्क्षिप्त व्यंजन (2) – ड, ढ
f. प्रकंपित व्यंजन (1) – र
g. पार्श्विक व्यंजन (1) – ल
h. संघर्षहीन व्यंजन (2) – य, व

परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण तथ्य (''वर्ण विचार'' से संबंधित)

- दीर्घ स्वर को संयुक्त स्वर के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि दीर्घ स्वरों की रचना प्राय दोनों स्वरों के मिलने से होती है।
- सात दीर्घ स्वरों को भी दो भागों समानाक्षर स्वर, संधि स्वर के रूप में विभाजित किया जाता है।

	समानाक्षर स्वर	संधि स्वर
(i)	आ – अ + अ	ए – अ + इ
(ii)	ई – इ + इ	ऐ – अ – ए
(iii)	ऊ – उ + उ	औ – अ + ओ

- प्लुत स्वर वर्गीकरण का सर्वप्रथम साक्ष्य पाणिनि की अष्टाध्यायी रचना में मिलता है।
- हिन्दी वर्णमाला में कुछ व्यंजन शब्दों के नीचे नुक्ता (बिन्दु) का प्रयोग किया जाता है, जिन्हे आगत/गृहीत व्यंजन कहा जाता है।
- आगत व्यंजनों की कुल संख्या 05 होती है।

क़ – क़रीब
ख़ – ख़ाना
ग़ – ग़म
ज़ – ज़रा
फ़ – फ़न, फ़ाइल (अंग्रेजी)

अंग्रेजी से गृहीत स्वर.
ऑ (ऍ)
जैसे – कॉलेज, डॉक्टर

- हिन्दी भाषा में आगत व्यंजनो का आगमन अरबी/फारसी, अग्रेजी भाषा से हुआ है।
- हिन्दी भाषा में नुक्ता व्यंजन की शुरूआत का श्रेय हिन्दी विद्वान ''विप्रसाद सितारे हिंद'' को जाता है।
- काकल वर्ण के अन्तर्गत, (:) विसर्ग को शामिल किया जाता है।
- वर्त्स वर्णो में न, स, ल को शामिल किया जाता है।
- इसकी कुल संख्या चार होती है।
  (1) जिह्वा (2) अधरोष्ठ (नीचे का होंठ)
  (3) स्वर तंत्रियाँ (4) कोमल तालु
- तालु उच्चारण स्थान में आनें वाले वर्णो को कोमल तालव्य व कठोर तालव्य के रूप में दो भागो में विभाजित किया गया है।
- हिन्दी वर्णमाला में अं (अनुस्वार), अः (विसर्ग) को अयोगवाह वर्ण कहा जाता है। क्योंकि इन वर्णों को न तो स्वरों में जोड़ा जाता है व न ही व्यंजनों में अतः अयोगवाही वर्ण कहलाते है।
- हल् चिह्न (्) व्यंजन के स्वर रहित होनें का परिचायक है । स्वर रहित व्यंजन के साथ हल् का चिह्न लगाया जाता है या फिर खड़ी पाई वाले व्यंजन चिह्नो की खड़ी पाई हटा दी जाती है। उसके अर्द्धरूप का प्रयोग किया जाता है।
  जैसे– विद्या, पाठ्य, अपराह्न, पट्टा आदि।
  1. नांद या संवार वर्ण – सभी घोष वर्णों को ही कहा जाता है।
  2. विवार या श्वास वर्ण – सभी अघोष वर्णों को ही कहा जाता है।
  3. स्पृष्ठ वर्ण – सभी स्पर्श व्यंजन वर्णों को ही कहा जाता है।
  4. ईशत्स्पृष्ट वर्ण – अन्तस्थ व्यंजन (य,र,ल,व) वर्णों को ही कहा जाता है।
  5. ईशद्विवृत वर्ण – उष्म व्यंजन (ष, श, स, ह)
  6. रक्त वर्ण –प्रत्येक वर्ग का पाँचवा वर्ण
  7. सोष्म व्यंजन वर्ण – प्रत्येक वर्ग का दूसरा व चौथा वर्ण

नोट – हिन्दी वर्णमाला में मूल रूप से 11 स्वर व 33 व्यंजन सहित कुल 44 वर्ण होते है।

हिन्दी वर्णमाला की वर्तमान में अपवादित स्थिति को सारणी के माध्यम से समझें।

स्वर	व्यंजन	कुल
स्वर 11	व्यंजन 33	44
–	ड., ढ. + (2) (उत्क्षिप्त व्यंजन)	46
–	अं, अः + (2) (अयोगवाह)	48
–	क्ष, त्र, ज्ञ, श्र + (4) संयुक्त व्यंजन	52
	क़ ख़ ग़ ज़ फ़ + 5 गृहीत व्यंजन	57

नोट – सर्वमान्य मत हिन्दी वर्णमाला में कुल 44 वर्ण होते हैं।

उत्क्षिप्त वर्ण

जिन ध्वनियों के उच्चारण में जिह्वा मूध्र्दा को स्पर्श कर तुरन्त नीचे गिरती है, उन्हे उत्क्षिप्त वर्ण कहते हैं।

जैसे – ड. ढ.

नियम – 1. यदि शब्द की शुरूआत उत्क्षिप्त वर्णों से हो तो लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आता है ।

जैसे – डमरू, ढोलक, डलिया, ढक्कन, डाली

नियम – 2. यदि शब्द के अन्तर्गत इनसे पहले आधा वर्ण आता है तो भी लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आता है।

जैसे – पण्डित, बुड्ढा, अड्डा, खण्ड, मण्डल आदि ।

- उपर्युक्त दोनों नियमों के अलावा प्रत्येक स्थिति में इनके नीचे बिन्दु आता है।
  जैसे – पढ.ाई, लड.ाई, सड़क, पकड़ना, ढूँढना आदि।

रकार/रेफ या र संबंधित नियम

नियम 1. – यदि र् के बाद व्यंजन वर्ण आए तो र् को उसी व्यंजन वर्ण के उपर लिखते हैं अर्थात् जिस व्यंजन वर्ण से पहले र् का उच्चारण किया जाता है, र को उसी व्यंजन वर्ण के उपर लिखा जाता है।

जैसे – कर्म, धर्म, वर्ण, दर्शक, स्वर्ग, अर्थात्, पुनर्जन्म, पुनर्निमाण, आशीर्वाद।

नियम 2. – यदि र् से पहले व्यंजन वर्ण आए तो र् को उसी व्यंजन वर्ण के मध्यय में लिखा जाता है।

जैसे – प्रकाश, प्रभात, प्रेम, क्रम, भ्रम, भ्रष्ट, भ्राता

Toppersnotes
Unleash the topper in you

2 CHAPTER लिंग

लिंग शब्द का अर्थ होता है- चिह्न या पहचान।
लिंग से तात्पर्य भाषा के ऐसे प्रावधानों से है जो वाक्य के कर्ता के स्त्री, पुरुष, निर्जीव होने के अनुसार बदल जाते है। विश्व की लगभग एक चौथाई भाषाओं में किसी न किसी प्रकार की लिंग व्यवस्था है ।

हिन्दी में दो लिंग होते है पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग, जबकि संस्कृत में तीन लिंग होते है- पुल्लिंग, स्त्रीलिंग तथा नपुंसक लिंग । फारसी जैसे भाषाओं में लिंग नहीं होता, और अंग्रेजी में भी लिंग सिर्फ सर्वनाम में होता है।

उदाहरण

- मोहन पढता है- पढता का रूप पुल्लिंग है, इसका स्त्रीलिंग रूप 'पढती' है ।
- गीता गाती है- यहाँ, 'गाती' का रूप स्त्रीलिंग है ।

लिंग के भेद

संसार में तीन जातियाँ होती है - पुरुष, स्त्री, जड । इन्ही जातियों के आधार पर लिंग के भेद बनाए गये हैं ।

1. पुल्लिंग
2. स्त्रीलिंग
3. नपुंसकलिंग

पुल्लिंग

जिन संज्ञा के शब्दों से पुरुष जाति का पता चलता है उसे पुल्लिंग कहते हैं ।
जैसे :- पिता, राजा, घोडा, कुत्ता, बंदर, हंस, बकरा, लड़का, आदमी, सेठ, मकान, लोहा, चश्मा, दुःख, प्रेम, लगाव, खटमल, फूल, नाटक, पर्वत, पेड, मुर्गा, बैल, भाई, शिव, हनुमान, शेर आदि।

पुल्लिंग अपवाद
पक्षी, फरवरी, एवरेस्ट, मोतिया, दिल्ली, स्त्रीत्व आदि ।

पुल्लिंग की पहचान

1. जिन शब्दों के पीछे अ, त्व, आ, आव, पा, पन, न आदि प्रत्यय आये वे पुल्लिंग होते हैं जैसे :- मन, तन, वन, शेर, राम, कृष्ण, सतीत्व, देवत्व, मोटापा, चढाव, बुढापा, लडकपन, बचपन, लेन-देन आदि ।
2. पर्वतों के नाम पुल्लिंग हाते हैं ।
   जैसे :- हिमालय, हिमाचल, विंध्याचल, सतपुडा, आल्पस, यूराल, कंचनजंगा, फ्यूजियामा, कैलाश, मलयाचल, माउण्ट एवरेस्ट आदि ।
3. दिनों के नाम पुल्लिंग होते है । जैसे :- सोमवार, मंगलवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार, रविवार आदि ।
4. देशों के नाम पुल्लिंग होते है । जैसे :- भारत, चीन, ईरान, यूनान, रूस, जापान, अमेरिका, पाकिस्तान, उत्तरप्रदेश, हिमाचल, मध्यप्रदेश आदि ।
5. धातुओं के नाम पुल्लिंग होते हैं । जैसे :- सोना, ताँबा, पीतल, लोहा, चाँदी, पारा आदि ।
6. नक्षत्रों के नाम पुल्लिंग होते हैं । जैसे :- सूर्य, चन्द्र, राहू, आकाश, शनि, बुध, बृहस्पति, मंगल, शुक्र आदि ।
7. महीनों के नाम पुल्लिंग होते हैं । जैसे :- फरवरी, मार्च, चैत्र, आषाढ, फाल्गुन आदि ।
8. द्रवों के नाम पुल्लिंग होते हैं ।
   जैसे :- पानी, तेल, पेट्रोल, घी, शरबत, दही, दूध आदि ।
9. पेडों के नाम पुल्लिंग होते हैं ।
   जैसे :- केला, पपीता, शीशम, सागौन, जामुन, बरगद, पीपल, नीम, आम, अमरूद, देवदार, अनार, अशोक, पलाश आदि।
10. सागर के नाम पुल्लिंग हाते है । जैसे :- हिन्द महासागर, प्रशांत महासागर, अरब महासागरआदि ।
11. समय के नाम पुल्लिंग होते हैं । जैसे :- घंटा, पल, क्षण, मिनट, सेकंड आदि
12. अनाजों के नाम भी पुल्लिंग हाते हैं । जैसे :- गेहूँ, बाजरा, चना, जौ आदि ।
13. वर्णमाला के अक्षरों के नाम पुल्लिंग होते है । जैसे :- अ, उ, ए, ओ, क, ख, ग, घ, च, छ, य, र, ल, व श आदि ।
14. प्राणीवाचक शब्द हमेशा पुरुष जाति का ही बोध कराते है । जैसे :- बालक, गीदड, कौआ, कवि, साधु, खटमल, भेडिया, खरगोश, चीता, मच्छर, पक्षी आदि।
15. समूह वाचक संज्ञा भी पुल्लिंग होती है । जैसे :- मण्डल, समाज, दल, समूह, सभा, वर्ग, पंचायत आदि।
16. भारी और बेडौल वस्तु भी पुल्लिंग होती है। जैसे :- जूता, रस्सा, पहाड, लोटा आदि।
17. रत्नों के नाम भी पुल्लिंग होते हैं। जैसे :- नीलम, पुखराज, मूँगा, माणिक्य, पन्ना, मोती, हीरा आदि।
18. फूलों के नाम पुल्लिंग होते हैं।
   जैसे :- गेंदा, कमल, गुलाब आदि।
19. द्वीप भी पुल्लिंग होते हैं। जैसे :- अंडमान-निकोबार जावा, क्यूबा, न्यू फाउंलैंड आदि।
20. शरीर के अंग पुल्लिंग होते हैं। जैसे :- हाथ, पैर, गला, अंगूठा, कान, सिर मुँह, घुटना, हृदय, दांत, मस्तक आदि।
21. दान, खाना, वाला से खत्म होने वाले शब्द हमेशा पुल्लिंग होते है। जैसे :- खानदान, पीकदान, दवाखाना, जेलखाना, दूधवाला, दुकान वाले आदि।
22. आकारान्त संज्ञा पुल्लिंग होती है।
   जैसे::- गुस्सा, चश्मा, पैसा, छाता आदि ।

स्त्रीलिंग

जिन संज्ञा शब्दों से स्त्री जाति का पता चलता है उसे स्त्रीलिंग कहते है

जैसे :- हंसिनी, लड़की, बकरी, माता, रानी, जूं, सुंई गर्दन, लज्जा, घोडी, कुतिया, बंदरिया, कुर्सी, पत्ती, नदी, शाखा, मुर्गी, गाय, बहन, यमुना, बुआ, लक्ष्मी, गंगा, औरत, शेरनी, नारी, झोंपडी, लोमडी आदि ।

स्त्रीलिंग के अपवाद

जैसे :- जनवरी, मई, जुलाई, पृथ्वी, मक्खी, ज्वार, अरहर, मूँग, चाय, कॉफी, लस्सी, चटनी, इ, ई, ऋ, जीभ, आँख, नाक, उँगलियाँ, सभा, कक्षा, संतान, प्रथम, तिथि, छाया, खटास, मिठास, आदि ।

स्त्रीलिंग प्रत्यय

जब पुल्लिंग शब्दों को स्त्रीलिंग बनाया जाता है तब प्रत्ययों को शब्दों में जोड़ा जाता है जिन्हें स्त्रीलिंग प्रत्यय कहते हैं ।

जैसे :- ई = बडा- बडी, भला - भली आदि ।

इनी = योगी-योगिनी, कमल- कमलिनी आदि ।

इन = धोबी - धोबिन, तेल-तेली आदि ।

नि = मोर - मोरनी, चोर-चोरनी आदि ।

आनी = जेठ - जेठानी, देवर - देवरानी आदि ।

आइन = ठाकुर - ठकुराइन, पंडित - पण्डिताइन आदि ।

इया = बेटा - बिटिया, लोटा - लुटिया आदि ।

स्त्रीलिंग की पहचान

1. जिन संज्ञा शब्दों के पीछे ख, ट, वट, हट, आनी आदि आयें वे सभी स्त्रीलिंग होते हैं
   जैसे :- कडवाहट, आहट, बनावट, शत्रुता, मूर्खता, मिठाई, छाया, ईख, भूख, चोख, राख, कोख, लाख, देखरेख झंझट, आहट, चिकनाहट सजावट, इन्द्राणी, जेठानी, ठकुरानी, राजस्थानी आदि ।
2. अनुस्वारांत, ईकारांत, ऊकारांत, तकारांत, सकारांत आदि संज्ञाएँ आती है वे स्त्रीलिंग होती है। जैसे :- रोटी, टोपी, नदी, चिट्ठी, उदासी, रात, बात, छत, भीत, लू, बालू, दारू, सरसों, खडाऊं, प्यास, वास, साँस, नानी, बेटी, मामी, भाभी आदि
3. भाषा, बोलियों तथा लिपियों के नाम स्त्रीलिंग होते है ।
   जैसे : - हिंदी, संस्कृत, देवनागरी, पहाडी, अंग्रेजी, पंजाबी गुरुमुखी, फ्रांसीसी, अरबी, फारसी, जर्मन, बंगाली रूसी आदि ।
4. नदियों के नाम स्त्रीलिंग होते है :- जैसे :- गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, रावी, कावेरी, कृष्णा, व्यास, सतलज, झेलम, ताप्ती, नर्मदा आदि ।
5. तरीखो और तिथियों के नाम स्त्रीलिंग होते है ।
   जैसे:- पहली, दूसरी, प्रतिपदा, पूर्णिमा, पृथ्वी, अमावस्या, एकादशी, चतुर्थी, प्रथमा आदि ।
6. नक्षत्रो के नाम स्त्रीलिंग होते है। जैसे :- अश्विनी, भरणी, रोहिणी, खे ती, मृगशिरा, चित्रा आदि ।
7. हमेशा स्त्रीलिंग रहने वाली संज्ञा होती है । जैसे :- मक्खी, कोयल, मछली, तितली, मैना आदि ।
8. समूहवाचक संज्ञा स्त्रीलिंग होती है । जैसे :- भीड, कमेटी, सेना, सभा, कक्षा आदि ।
   प्राणीवाचक संज्ञा स्त्रीलिंग होती है । जैसे :- धाय, संतान, सौतन आदि ।
9. पुस्तकों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं ।
   जैसे :- कुरान, रामायण, गीता, रामचरितमानस, बाइबल, महाभारत आदि ।
10. आहारो के नाम स्त्रीलिंग होते है ।
    जैसे :- सब्जी, दाल, कचौरी, पूरी, रोटी, पकोडी आदि ।
11. शरीर के अंगों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं जैसे :- आँख, नाक, जीभ, पलक, उँगली, ठोडी आदि ।
12. अभुषण और वस्त्रों के नाम स्त्रीलिंग होते है । जैसे :- साडी, सलवार, चुन्नी, धोती, टोपी, पेंट, कमीज, पगडी माला, चूडी, बिंदी, कंघी, नथ, अंगूठी आदि ।
13. मसालों के नाम भी स्त्रीलिंग होते हैं ।
    जैसे :- दालचीनी लौंग, हल्दी, मिर्च, धनिया, इलायची, अजवाइन, सौंफ, चाय आदि ।
14. राशि के नाम स्त्रीलिंग होते हैं । जैसे :- कुम्भ, मीन, तुला, सिंह, मेष, कर्क आदि ।

पुल्लिंग और स्त्रीलिंग दोनों में प्रयुक्त होने वाले शब्द इस प्रकार है

प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, राष्ट्रप्रति, उपराष्ट्रपति, चित्रकार, पत्रकार गवर्नर, वकील, डॉक्टर, सेक्रेटरी प्रोफेसर, शिशु दोस्त, बर्फ, मेहमान, मित्र, ग्राहक, प्रिंसिपल, मैनेजर, मंत्री आदि ।

पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के नियम इस प्रकार है

1. अ, आ पुल्लिंग शब्दों को जब 'ई' कर दिया जाता है तो वे स्त्रीलिंग हो जाते है। पुल्लिंग = स्त्रीलिंग के उदाहरण इस प्रकार है :-
   - गूँगा - गूँगी
   - गधा - गधी
   - देव - देवी
   - नर - नारी
   - नाला - नाली
   - लड़का - लड़की
   - पुंत्र - पुत्री
   - दास - दासी
   - बेटा - बेटी
2. जब अ, आ, वा आदि पुल्लिंग शब्दों को स्त्रीलिंग में बदला जाता है तो अ, आ, तथा वा की जगह पर इया लगा दिया जाता है। पुल्लिंग = स्त्रीलिंग के उदहारण इस प्रकार है :-
   - लोटा = लुटिया
   - बन्दर = बंदरिया
   - बूढा = बुढिया
   - बेटा = बिटिया
   - चिडा = चिडिया

3. जब 'अक' जैसे तत्सम शब्दों में 'इका' जोडकर भी स्त्रीलिंग बनाए जाते है ।
   तत्सम शब्द + इका = स्त्रीलिंग के उदहारण इस प्रकार है ।
   - अध्यापक + इका = अध्यापिका
   - पत्र + इका = पत्रिका
   - चालक + इका = चालिका
   - सेवक + इका = सेविका
   - लेखक + इका = लेखिका
   - गायक + इका = गायिका
   - पाठक + इका = पाठिका
   - संपादक + इका = संपादिका
4. जब पुल्लिंग को स्त्रीलिंग बनाया जाता है तो कभी-कभी नर या मादा लगाना पडता है ।
   पुल्लिंग = स्त्रीलिंग के उदाहरण इस प्रकार है :-
   - तोता = मादा तोता
   - खरगोश = मादा खरगोश
   - मच्छर = मादा मच्छर
   - जिराफ = मादा जिराफ
   - खटमल = मादा खटमल
   - मगरमच्छ = मादा मगरमच्छ
   - उल्लू = मादा उल्लू
   - कोयल = नर कोयल
   - चील - नर चील
   - मकड़ी = नर मकडी
   - भेड = नर भेड
   - मक्खी = नर मक्खी
   - गिलहरी = नर गिलहरी
   - मैना = नर मैना
   - कछुआ = नर कछुआ
   - भालू = मादा भालू
   - भेडिया = मादा भेडिया
5. कुछ शब्द स्वतंत्र रूप से स्त्री-पुरुष के स्वयं में ही जोडे होते हैं । कुछ पुल्लिंग शब्दों के स्त्रीलिंग बिल्कुल उल्टे होते हैं ।
   पुल्लिंग = स्त्रीलिंग के उदहारण इस प्रकार है-
   - राजा = रानी
   - सम्राट = सम्राज्ञी
   - पिता = माता
   - भाई = बहन
   - वर = वधू
   - पति = पत्नी
   - मर्द = औरत
   - पुरुष = स्त्री
   - बैल = गाय
   - पुत्र = पुत्री
   - फूफा = बुआ
6. कुछ शब्दों का स्त्रीलिंग न हो पाने की वजह से उनमें 'आनी' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग बनाया जाता है ।
   पुल्लिंग + आनी = स्त्रीलिंग के उदाहरण इस प्रकार है-
   - सेठ + आनी = सेठानी
   - देवर + आनी = देवरानी
   - नौकर + आनी = नौकरानी
   - इंद्र + आनी = इन्द्राणी
   - जेठ + आनी = जेठानी
   - मेहतर + आनी = मेहतरानी
7. कभी-कभी पुल्लिंग के कुछ शब्दों में इन जोडकर स्त्रीलिंग बनाया जाता है । पुल्लिंग + 'इन' = स्त्रीलिंग के उदाहरण इस प्रकार हैं -
   - साँप + इन = सॉपिन
   - सुनार + इन = सुनारिन
   - नाती + इन = नातिन
   - दर्जी + इन = दर्जिन
   - कुम्हार + इन = कुम्हारिन
   - लुहार + इन = लुहारिन
   - माली + इन = मालिन
   - धोबी + इन = धोबिन
   - बाघ + इन = बाघिन
8. कभी-कभी बहुत से शब्दों में 'आइन' जोड़कर स्त्रीलिंग बनाए जाते हैं। पुल्लिंग + आइन = स्त्रीलिंग के उदाहरण इस प्रकार है :-
   - चौधरी + आइन = चौधराइन
   - हलवाई + आइन = हलवाइन
   - पंडित + आइन = पण्डिताइन
   - ठाकुर + आइन = ठकुराइन
   - बाबू + आइन = बबुआइन
9. जब पुल्लिंग शब्दों में ता की जगह पर 'त्री' लगा दिया जाता है तो वे स्त्रीलिंग बन जाते है । पुल्लिंग = स्त्रीलिंग के उदाहरण इस प्रकार है
   - नेता = नेत्री
   - दाता = दात्री
   - अभिनेता = अभिनेत्री
   - रचयिता = रचयित्री
   - विधाता = विधात्री
   - वक्ता = वक्त्री
   - धाता = धात्री
10. जब पुल्लिंग के जाति और भाव बताने वाले शब्दों में 'नी' लगा दिया जाता है तो वे स्त्रीलिंग में बदल जाते हैं । पुल्लिंग शब्द + नी = स्त्रीलिंग के उदाहरण इस प्रकार है ।
    - सियार + नी = सियारनी
    - हिन्दू + नी = हिन्दुनी
    - ऊँट + नी = ऊँटनी

3 CHAPTER वचन

वचन

- व्याकरण में वचन का अर्थ है – संख्या, जिससे किसी विकारी शब्द को संख्या का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं।
- वचन मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं –
  (i) एकवचन
  (ii) बहुवचन

एकवचन

जिस शब्द में किसी व्यक्ति या वस्तु की संख्या एक होने का पता चले उसे एकवचन कहते हैं।

जैसे – लड़का खेल रहा है।
खलौना टूट गया है।
यह मेरी पुस्तक है।

इन वाक्यों में लड़का, खिलौना तथा पुस्तक शब्द एकवचन है।

नोट – कुछ ऐसे भी शब्द होते हैं, जो प्रायः किसी भी स्थिति में एकवचन ही रहते हैं।

जैसे – तेल, वर्षा, नल, जनता, आग, आकाश, सत्य, झूठ, मिठास, प्रेम, मोह, सोना, चाँदी, दूध, लोहा आदि हैं।

बहुवचन

जिस शब्द से किसी व्यक्ति या वस्तु को संख्या एक से अधिक होने पर का पता चले उसे बहुवचन कहते हैं।

जैसे – लड़कें खेल रहे हैं।
खिलौने टूट गए हैं।
ये पुस्तकें मेरी हैं।

इन वाक्यों में आए, लड़के, खिलौने, पुस्तकें शब्द बहुवचन हैं।

नोट – कुछ शब्द ऐसे होते हैं जो किसी भी स्थिति में हमेशा बहुवचन ही रहते हैं।

जैसे – बाल, लोग, होश, हाल–चाल, आप, नियम, दाम, दर्शन, हस्ताक्षर आदि है।

एकवचन से बहुवचन बनाने के कुछ विशेष नियम

1. शब्दांत 'अ' को बदलकर 'ए' में बदलकर

पुस्तक	–	पुस्तकें
दीवार	–	दीवारें
दाल	–	दालें
सड़क	–	सड़कें
कलम	–	कलमें
राह	–	राहें

2. शब्दांत 'आ' के साथ 'एँ' जोड़कर

बाला	–	बालाएँ
कविता	–	कविताएँ
कथा	–	कथाएँ

3. 'ई' वाले शब्दों के अंत मे आए 'इयाँ' लगाकर

देवी	–	देवियाँ
नदी	–	नदियाँ
लड़की	–	लड़कियाँ
साड़ी	–	साड़ियाँ
स्त्री	–	स्त्रियाँ

4. शब्दांत 'आ' को 'ए' में बदलकर

कमरा	–	कमरे
बेटा	–	बेटे
लड़का	–	लड़के
बस्ता	–	बस्ते
रसगुल्ला	–	रसगुल्ले
पपीता	–	पपीते

5. स्त्रीलिंग शब्द के अंत में आए 'या' को 'याँ' में बदलकर

चिड़िया	–	चिड़ियाँ
डिबिया	–	डिबियाँ
गुड़िया	–	गुड़ियाँ

6. स्त्रीलिंग शब्द के अंत में आए 'उ' 'ऊ' के साथ 'एँ' लगाकर

वधू	–	वधुएँ
वस्तु	–	वस्तुएँ
बहू	–	बहूएँ

7. 'इ' 'ई' स्वरान्तवाले शब्दों के साथ 'यों' लगाकर तथा 'ई' को मात्रा को 'इ' में बदलकर

जाति	–	जातियों
रोटी	–	रोटियो
लाठी	–	लाठिया
नदी	–	नदियो
अधिकारी	–	अधिकारियों
गाड़ी	–	गाड़ियों

8. एकवचन शब्द के साथ जन, गण, वर्ग, वृंद, मण्डल, परिषद् आदि लगाकर

गुरू	–	गुरूजन
खेती	–	खेतिहर
युवा	–	युवावग
भक्त	–	भक्तजन
मंत्री	–	मंत्रिमण्डल, मंत्रीपरिषद्

4 CHAPTER काल

काल

क्रिया के घटित होने वाले समय को काल कहा जाता है।

दूसरे शब्दों में

- काल का अर्थ –'समय' है। क्रिया के जिस रूप से उसके होने का समय मालूम हो उसे काल कहते हैं। काल के इस रूप से क्रिया की पूर्णता, अपूर्णता के साथ ही सम्पन्न होने का समय का बोध कराते हैं।
- काल के तीन भेद होते हैं–
  (i) भूतकाल
  (ii) वर्तमान काल
  (iii) भविष्यत् काल

भूतकाल

- भूतकाल का अर्थ है 'बीता हुआ समय' वाक्य में जिस क्रिया रूप से बीते का होना पाया जाता है वह भूतकाल कहलाता है। यह क्रिया व्यापार की समाप्ति बतलाने वाला रूप है।
- भूतकाल के सामान्यतः 6 उपभेद हैं –
  1. सामान्यतः भूतकाल
  2. संदिग्ध भूतकाल
  3. हेतुहेतुमद् भूतकाल
  4. आसन्न भूतकाल
  5. पूर्ण भूतकाल
  6. अपूर्ण भूतकाल

1. सामान्यतः भूतकाल

- अविनाश ने गाया।
- गाड़ी जा चुकी है।
- बच्चों ने पुस्तक पढ़ी।
- हमने एक बैल देखा।

पहचान – आ, ए, ई, या इत्यादि की मात्रा होगी।

2. संदिग्ध भूतकाल

- खाना नीता ने ही बनाया होगा।
- सोहन ने चोरी की होगी।

पहचान – ए होंगे, या होगा, ई होगी इत्यादि मात्रा।

3. हेतुहेतुमद् भूतकाल

- तुमने पढ़ाई की होती तो उत्तीर्ण हो जाते।

पहचान – शर्त होना

4. आसन्न भूतकाल

- राजकुमार हनुमानगढ़ गया है।
- अतुल ने खाना खाया है।

पहचान – या है, ई है आदि।

5. पूर्ण भूतकाल

- 1857 की क्रान्ति में रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों से लोहा लिया।
- राधा ने गाना गाया।

पहचान – या था, ई थी आदि।

6. अपूर्ण

- रोहन पुस्तक पढ़ता था।
- राजकुमार पुस्तक पढ़ता था।

पहचान – ता था, ती थी, ते थे आदि।

वर्तमान काल

- क्रिया का वह रूप जिससे कार्य का वर्तमान समय में होना ही वर्तमान काल कहलाता है।
- कार्य का निरंतर हो रहा है।
- वर्तमान काल को 5 उपभेदों में बाँटा गया है –
  1. सामान्यतः वर्तमान काल
  2. अपूर्ण वर्तमान काल
  3. संदिग्ध वर्तमान काल
  4. सम्भाव्य वर्तमान काल
  5. आज्ञार्थक वर्तमान काल

1. सामान्यतः वर्तमान काल

- राधा पूजा करती है।
- मानसी शोर करती है।

पहचान – ता है, ती है, ता हूँ आदि।

2. अपूर्ण वर्तमान काल

- अक्षय पंकज के साथ पढ़ रहा है।
- मोर छत पर नाच रहा है।

पहचान – रहा है, रही है, रहे है आदि।

3. संदिग्ध वर्तमान काल

- राजू हिन्दी पढ़ता होगा।
- राधा पढ़ती होगी।

पहचान – ता होगा, ती होगी, रहा होगा आदि।

5. आज्ञार्थक वर्तमान काल

- राजकुमार अब तु क्रिकेट खेल।
- अतुल तुम भी पढ़ो।

पहचान – वर्तमान समय में आज्ञा देगा।

भविष्यत् काल

क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात होता है कि कार्य आने वाले समय में होगा।

1. सामान्य भाविष्यत् काल
2. सम्भाव्य भविष्यत् काल
3. आज्ञार्थक भविष्यत् काल

4. सम्भाव्य वर्तमान

- शायद राजा पढ़ता हो।
- शायद कमलेश नोकर के साथ आया हो।

पहचान – ता हो, ती हो, ई हो आदि।

1.सामान्य भविष्यत काल

- औरतें गीत गाएगी।
- अंकित पुस्तक पढ़ेगा।
- वह घर जाएगा।

पहचान – एगा, एगी, एंगे।

2. सम्भाव्य भविष्यत् काल

- अब वह क्या करें।
- वह शायद 'विद्यालय' जाए।

पहचान–ए, ऐ, ओ।

3. आज्ञार्थक भविष्यत् काल

- आप हमारे गाँव पधारिएगा।
- आप वहाँ अवश्य जाइएगा।

पहचान – इएगा।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

5 CHAPTER संज्ञा

परिभाषा

- किसी प्राणी, स्थान, वस्तु तथा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाती हैं।
- साधारण शब्दों में नाम को ही संज्ञा कहते है।
- जैसे – अजय ने जयपुर के हवामहल की सुंदरता देखी।
- अजय एक व्यक्ति है, जयपुर स्थान का नाम है, हवामहल वस्तु का नाम है। सुंदरता एक गुण का नाम है।

संज्ञा के भेद –

संज्ञा के मुख्यतः तीन भेद है –

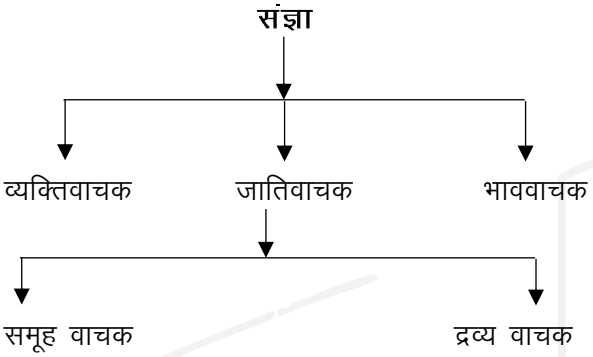

1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा** – जिस संज्ञा शब्द से एक ही व्यक्ति, वस्तु, स्थान के नाम का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।
   - व्यक्तिवाचक संज्ञा विशेष का बोध कराती है सामान्य का नही।
   - व्यक्तिवाचक संज्ञा में व्यक्तियों, देशों, शहरों, नदियों, पर्वतों, त्योहारों, पुस्तकों, दिशाओ, समाचार–पत्रों, दिन, महीनों के नाम आते हैं।
2. **जातिवाचक संज्ञा** – जिस संज्ञा शब्द से किसी जाति के संपूर्ण प्राणियों, वस्तुओं, स्थानों आदि का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।
   प्रायः जातिवाचक वस्तुओं, पशु–पक्षियों, फल–फूल, धातुओं, व्यवसाय संबंधी व्यक्तियों, नगर, शहर, गाँव, परिवार, भीड़ जैसे समूहवाची शब्दों के नाम आते हैं।

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा
प्रशान्त महासागर	महासागर
भारत, राजस्थान	देश, राज्य
रामचन्द्र शुक्ल, महावीर द्विवेदी	इतिहासकार, कवि
रामायण, ऋग्वेद	ग्रंथ, वेद
अजय की भैंस	भदावरी, मुर्रा
हनुमानगढ, नोहर	जिला, उपखण्ड
ग्राण्ड ट्रंक रोड़	रोड़, सड़क

3. **भाववाचक संज्ञा** – जिस संज्ञा शब्द में प्राणियों या वस्तुओं के गुण, धर्म, दशा, कार्य, मनोभाव, आदि का बोध हो उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।
   - प्रायः गुण–दोष, अवस्था, व्यापार, अमूर्त भाव तथा क्रिया भाववाचक संज्ञा के अन्तर्गत आते हैं।
   - भाववाचक संज्ञा की रचना मुख्यतः पाँच प्रकार के शब्दों से होती हैं।
     1. जातिवाचक संज्ञा से
     2. सर्वनाम से
     3. विशेषण से
     4. क्रिया से
     5. अव्यय से

जातिवाचक संज्ञा से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
बच्चा	बचपन
शिशु	शैशव
ईश्वर	ऐश्वर्य
विद्वान	विद्वता
व्यक्ति	व्यक्तित्व
मित्र	मित्रता
बंधु	बंधुत्व
पशु	पशुता
बूढ़ा	बुढापा
पुरूष	पुरूषत्व
दानव	दानवता
इंसान	इंसानियत
सती	सतीत्व
लड़का	लड़कपन
आदमी	आदमियत
सज्जन	सज्जनता
गुरु	गौरव
चोर	चोरी
ठग	ठगी

विशेषण से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

विशेषण	भाववाचक संज्ञा
बहुत	बहुतायत
न्यून	न्यूनता
कठोर	कठोरता
वीर	वीरता
विधवा	वैधव्य
मूर्ख	मूर्खता
चालाक	चालाकी
निपुण	निपुणता

शिष्ट	शिष्टता
गर्म	गर्मी
ऊँचा	ऊँचाई
आलसी	आलस्य
नम्र	नम्रता
सहायक	सहायता
बुरा	बुराई
चतुर	चतुराई
मोटा	मोटापा
शूर	शौर्य / शूरत
स्वस्थ	स्वास्थ्य
सरल	सरलता
मीठा	मिठास
आवश्यक	आवश्यकता
निर्बल	निर्बलता
हरा	हरियाली
काला	कालापन / कालिमा
छोटा	छुटपन
दुष्ट	दुष्टता

क्रिया से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

क्रिया	भाववाचक संज्ञा
बिकना	बिक्री
गिरना	गिरावट
थकना	थकावट / थकान
हारना	हार
भूलना	भूल
पहचानना	पहचान
खेलना	खेल
सजाना	सजावट
लिखना	लिखावट
जमना	जमाव
पढ़ना	पढ़ाई
हंसना	हँसी
भूलना	भूल
उड़ना	ऊड़ान
सुनना	सुनवाई
कमाना	कमाई
गाना	गान
चमकना	चमक
उड़ना	उड़ान
पीना	पान

अव्यय से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

अव्यय	भाववाचक संज्ञा
उपर	उपरी
समीप	सामीप्य
दूर	दूरी
धिक्	धिक्कार
निकट	निकटता
शीघ्र	शीघ्रता
मना	मनाही

- 'अन' प्रत्यय से जुड़ें शब्द भाववचाक संज्ञा शब्द माने जाते हैं।
  जैसे – व्याकरण वि + आ + कृ + अन
  कारण कृ + अन
- कुछ विद्वानों ने संज्ञा के दो अन्य भेद भी स्वीकार किये हैं।

1. **समुदायवाचक संज्ञा** – ऐसे संज्ञा शब्द जो किसी समूह की स्थिति को बताते हैं। समुदाय वाचक संज्ञा कहलाते हैं। जैसे – सभा, भीड़, ढेर, मण्डली, सेना, कक्षा, जुलूस, परिवार, गुच्छा, जत्था, दल आदि।

2. **द्रव्य वाचक संज्ञा** – किसी द्रव्य या पदार्थ का बोध कराने वाले शब्दों को द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।
   जैसे – दूध, घी, तेल, लोहा, सोना, पत्थर, ऑक्सीजन, पारा, चाँदी, पानी आदि।
   नोट – जातिवाचक संज्ञा का कोई शब्द यदि वाक्य प्रयोग में किसी व्यक्ति के नाम को प्रकट करने लगे तो वहाँ व्यक्तिवाचक संज्ञा मानी जाती है।
   आजाद – भारत की स्वतंत्रता में चन्द्रशेखर आजाद ने महत्त योगदान दिया था।
   सर दार – सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भारत को जोड़नें की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
   गाँधी – गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन को शुरू किया था।

- ओकारान्त बहुवचन में लिखा विशेषण शब्द विशेषण न मानकर जातिवाचक संज्ञा शब्द माना जाता है।
  जैसे –

गरीब	गरीबों
बड़ा	बड़ों
अमीर	अमीरों

6 CHAPTER सर्वनाम

परिभाषा – भाषा में सुंदरता, संक्षिप्तता, एवं पुनरुक्ति दोष से बचने के लिए संज्ञा के स्थान पर जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है, वह सर्वनाम कहलाता है।

- सर्वनाम शब्द सर्व + नाम के योग से बना है जिसका अर्थ है – सब का नाम।
- सभी संज्ञाओं के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। सर्वनाम के प्रयोग से वाक्य में सहजता आ जाती है।
  जैसे – अमर आज विद्यालय नहीं आया क्योंकि वह अजमेर गया है।
- संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

सर्वनाम के भेद – सर्वनाम के कुल 06 भेद हैं

1. पुरुषवाचक
2. निश्चय वाचक
3. अनिश्चय वाचक
4. संबंध वाचक
5. प्रश्न वाचक
6. निजवाचक

1. **पुरुषवाचक सर्वनाम** – वे सर्वनाम शब्द जिसका प्रयोग वक्ता, श्रोता, अन्य तीसरा (कहनें वाला, सुनने वाला, अन्य) जिसके लिए कहा जाए, के लिए प्रयुक्त होने वाले शब्द पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम को भी तीन भागों में बाँटा गया है

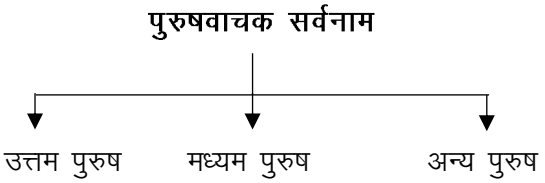

(i) उत्तम पुरुष – बोलने वाला / लिखने वाला
जैसे – मैं, हम, हम सब।

(ii) मध्यम पुरुष – श्रोता/सुनने वाला
जैसे – तू, तुम, आप, आप सब।

(iii) अन्य पुरुष – बोलने वाला व सुनने वाला जिस व्यक्ति या तीसरे के बारें में बात करें वह अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाता है।
जैसे – यह, वह, ये, वे, आप।

2. **निश्चय वाचक सर्वनाम** – वे सर्वनाम शब्द जो पास या दूर स्थित व्यक्ति या पदार्थ की ओर निश्चितता का बोध कराते हैं। वे निश्चय वाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
पास की वस्तु के लिए – यह, ये।
दूर की वस्तु के लिए – वह, ये।

3. **अनिश्चयवाचक सर्वनाम** – वे सर्वनाम शब्द जिससे किसी व्यक्ति या वस्तु के बारें में निश्चतता का बोध नहीं होता हैं। अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
जैसे – कोई
   - सजीवता के लिए – 'कोई' का प्रयोग
     उदाः रमन को कोई बुला रहा है।
   - निर्जीवता के लिए – 'कुछ' का प्रयोग
     उदाः दूध मे कुछ गिरा है।

4. **संबंधवाचक सर्वनाम** – दो उपवाक्यों के बीच आकर संज्ञा या सर्वनाम का संबंध दूसरे उपवाक्य के साथ दर्शाने वाले सर्वनाम संबंधवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
जैसे – जिसकी लाठी उसकी भैंस।
जो मेहनत करेगा वो सफल होगा।

5. **प्रश्नवाचक सर्वनाम** – जिस सर्वनाम शब्द का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता हैं वह प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाता है।
जैसे – वहाँ गलियारे से होकर कौन जा रहा था ?
कल तुम्हारे पास किसका पत्र आया था ?

6. **निजवाचक सर्वनाम** – ऐसे सर्वनाम शब्द जिसका प्रयोग स्वयं के लिए किया जाता है, निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
जैसे – आप, स्वयं, खुद, अपना।
जैसे – मैं अपने आप चला जाऊँगा।
   - सर्वनाम में आप शब्द का प्रयोग विभिन्न सर्वनामों में किया जाता है जिसका सही प्रयोग निम्न तरीकों से जाना जा सकता है।
     (i) अगर 'आप' शब्द का प्रयोग 'तुम' शब्द के रूप में किया जाता है तो – मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम होगा।
     (ii) 'आप' शब्द का प्रयोग स्वयं के अर्थ में होने पर – निजवाचक सर्वनाम होगा।
     (iii) आप शब्द का प्रयोग किसी अन्य व्यक्ति से परिचय करवाने के लिए प्रयुक्त हो तो वाक्य में अन्य पुरुष वाचक सर्वनाम होगा।